Psychoanalytic and Social Learning Approaches of Socialization

समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज के नियमों, मानको, रूढ़ियों के अनुकूल व्यवहार करना सीखता है। व्यक्ति में समाजीकरण किस प्रकार होता है और क्यों होता है ?इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए समाज मनोवैज्ञानिकों ने कुछ सिद्धान्त की व्याख्या किया है। जो निम्न है :- 1. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त **(Psychoanalytic theory)** 2. सामाजिक सीखना सिद्धान्त **(Social learning theory)** 3. सांकेतिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त **(Symbolic cognitive theory)** 4. दुर्खीम का सिद्धान्त **(Theory of Durkheim)** 5. कूली का सिद्धान्त **(Theory of Cooley)** 6. मीड का सिद्धान्त **(Theory of Mead)**

1. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त **(Psychoanalytic theory)** :- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मशहुर मनोवैज्ञानिक साइमण्ड फ्रायड **(Sigmund Freud)** ने किया था। जिसके अनुसार व्यक्तियों का समाजीकरण बचपनावस्था में माता-पिता के साथ हुई अन्त:क्रियाओं पर निर्भर करता है।

फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व विकास के कई मनोलैंगिक अवस्थाएँ होती है। इन विभिन्न अवस्थाओं में बच्चों का माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बहुत सारी अन्त:क्रियाएँ होती हैं। उदाहरणस्वरूप, माँ बच्चे को शौच प्रशिक्षण देती हैं तथा उसे समय-समय पर भोजन देती है। उसको स्नान कराती है तथा वस्त्र पहनाती हैं। इस सभी क्रियाओं के दौरान माँ कभी उसे दुलार-प्यार करती है तो कभी उसे डाँटती भी हैं। इस तरह से माँ और बच्चा के बीच एक सांवेगिक संबंध **(emotional relationship)** हो जाता है। "फ्रायडिन सिद्धान्त में विकास के कई मनोलैंगिक अवस्थाएँ सम्मिलित होती है और किसी परिवार में इन अवस्थाओं के दौरान होने वाले अन्त: क्रियाओं की प्रक्रियाएँ ही बच्चों को समाजीकृत करने का मूल आधार होती है।"

फ्रायड ने यह भी बतलाया है कि चूँकि प्रत्येक परिवार में बच्चे और माता-पिता के बीच अन्त:क्रियाएँ अलग-अलग होती हैं इसलिए एक परिवार के सदस्यों का समाजीकरण दूसरे परिवार के सदस्यों के समाजीकरण से भिन्न होता है। कभी-कभी यह भी देखने को मिलता है कि एक ही परिवा के कुछ बच्चे अधिक समाजीकृत होते हैं तो एकाध बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनका समाजीकरण उतना पूर्ण नहीं हो पाता है। एक परिवार के बच्चों में समाजीकरण में विभिन्नता का कारण बतलाते हुए फ्रायड ने कहा है कि जब माता-पिता द्वारा समान रूप से सभी बच्चों के साथ अन्त:क्रियाएँ नहीं की जाती हैं तो इस तरह की परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है।

इस तरह से फ्रायड के समाजीकरण के सिद्धान्त में बच्चों के लिए सबसे पहली सामाजिक वस्तु माता-पिता ही होते हैं। जैसे-जैसे बच्चा मनोलैंगिक अवस्थाओं में आगे की ओर बढ़ता जाता है वह अपने माता-पिता के साथ आत्मीकरण या तादात्मय स्थापित करता जाता है। इस तादात्मय का परिणाम

यह होता है कि धीरे-धीरे बच्चों में माता-पिता का सामाजिक शीलगुण अपने आप विकसित होने लगता है। इस तादात्मय **(Identification)** प्रक्रिया का अन्तिम चरण उस समय देखने को मिलता है जब माता-पिता के नैतिक गुणों का विकास हो जाता है तो फ्रायड के अनुसार पराहं का विकास पूर्ण मान लिया जाता है। पराहं के विकास पूर्ण होने पर बच्चों में इस बात का ज्ञान हो जाता है कि उसे समाज किस कार्य को करने की अनुमति देता है और किस कार्य को करने की अनुमति नहीं देता है। किस कार्य को करने से उसे समाज में प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किस कार्य को करने से उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा की हानि होगी आदि। बच्चों में पराहं **(super ego)** का विकास होने के साथ-ही-साथ जब उन्हें अच्छे-बुरे का पूर्णरूपेण ज्ञान हो जाता है, तो फ्रायड के अनुसार वैसे बच्चों को पूर्णरूपेण समाजीकृत मान लिया जाता है।

फ्रायड के समाजीकरण के इस सिद्धान्त का सबसे बड़ा अवगुण यह बतलायाा गया है कि सिद्धान्त में समाजीकरण की प्रक्रिया पराहं के विकास के साथ करीब-करीब पूर्ण हुई मान ली जाती है। परांह का विकास सामान्य बच्चों में 12-15 साल के बीच पूरा हो जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि फ्रायड के अनुसार, सामाजीकण की प्रक्रिया लगभग 15 साल के बाद नहीं होती है। लेकिन सच्चाई यह है कि समाजीकरण की प्रक्रिया एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो किसी उम्र पर आकर रूकती नहीं है। इस सिद्धान्त की दूसरी आलोचना आत्मीकरण की बिन्दु पर है। कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों का मत है कि आत्मीकरण की अवस्था व्यक्ति के भीतर की अवस्था है जिसे सही-सही मापा नहीं जा सकता है। इसलिए आत्मीकरण की प्रक्रिया के आधार पर समाजीकरण की वैज्ञानिक व्याख्या नहीं हो सकती है।

2. सामाजिक सीखना सिद्धान्त **(Social learning theory)** :- सामाजीकरण के इस सिद्धान्त का प्रतिपादन व्यवहारवादियों ने किया था जिसने फ्रायड के सिद्धान्त के आत्मीकरण को अस्वीकार करते हुए कहा है कि इस प्रक्रिया के द्वारा समाजीकरण की वैज्ञानिक व्याख्या नहीं हो सकती है क्योंकि आत्मीकरण की प्रक्रिया को देखा तथा मापा नहीं जा सकता है। अतः इन मनोवैज्ञानिकों ने समाजीकरण की व्याख्या सीखने की प्रक्रिया द्वारा की है। इस सिद्धान्त के समर्थकों का कहना है कि समाजीकरण सीखने की प्रक्रिया द्वारा होता है और इस तरह की सीखने की प्रक्रिया निम्नांकित तीन तरह से होती है -

(i) बच्चे समाज के नियमों के अनुसार व्यवहार करना माता-पिता द्वारा दिये गये पुनर्बलन के आधार पर सीखते है। माता-पिता बच्चों को कुछ व्यवहार करने के लिए प्रेरित करते हैं तथा वैसा व्यवहार करने पर उन्हें उचित पुरस्कार भी देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चे उस व्यवहार को बार-बार करके उचित सामाजिक परिस्थिति में उसे करना सीख लेते हैं। दूसरे तरफ कुछ व्यवहार ऐसे भी होते हैं जिन्हें माता-पिता नहीं करने के लिए प्रेरित करते हैं और

यदि बच्चें उन्हें करते हैं तो उसके लिए उन्हें दण्ड भी दिया जाता है। इस तरह से पुरस्कार एवं दण्ड के आधार पर बच्चों को माता-पिता समाजीकृत करते हैं।

(ii) कुछ मनोवैानिकों ने जिसमें अलबर्ट बैण्डुरा **(Albert Bandura)** का नाम अधिक मशहूर है, इस बात पर बल डाला है कि बच्चे मॉडल को देखकर या दूसरे किसी सामाजिक परिस्थिति में कैसे व्यवहार कर रहे हैं को देखकर भी नये-नये सामाजिक व्यवहारों को करना सीख जाते हैं। इस तरह के सीखना को प्रेक्षणात्मक सीखना या मॉडलिंग कहा जाता है। बैण्डरा का मत था कि व्यक्ति किसी बाह्य उद्दीपन के प्रति मात्र अनुक्रिया ही नहीं करता बल्कि अपनी आवश्यकता एवं प्रेरणा के अनुसार उस उद्दीपन के गुणों में से प्रमुख गुणों को चुनता है, उसे संगठित करता है तथा उसकी संज्ञानात्मक समीक्षा करके एक अनुक्रिया करता है। इस तरह से उन्होंने अपने प्रेक्षणात्मक सीखना में व्यक्ति की आवश्यकता प्रेरक एवं संज्ञान के महत्त्व को स्वीकार किया है और बतलाया है कि इन्हीं कारकों के कारण व्यक्ति किसी सामाजिक परिस्थिति में दूसरों द्वारा किये जा रहे किसी खास व्यवहार को मात्र प्रेक्षण करके ही सीख लेता है।

(iii) भूमिका-शिक्षण **(Role learning)** :- समाजीकरण याा सामाजिक सीखना की प्रक्रिया भूमिका शिक्षण द्वारा भी होता है। भूमिका शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति अपने समाज भूमिका करने वाले अन्य व्यक्तियों के व्यवहारों को समझता है तथाा अपने भावों के अनुरूप उनमें भी भाव उत्पन्न होने की कल्पना करता है। **Secord & Backman** ने भूमिका-शिक्षण को परिभाषित करते हुए कहा है, "सामाजिक सीखना का एक सामान्य रूप भूमिका-शिक्षण होता है जिसमें संसार या वातावरण को समझने, अनुभव करने तथा उसके प्रति व्यवहार करने के किसी व्यक्ति का तरीका ठीक उन्हीं व्यक्तियों के समान होता है जो कि भूमिका-शिक्षण में तीन बातों को महत्त्वपूर्ण बतलाया गया है निम्नांकित हैं :-

(a) प्रत्येक भूमिका **(role)** में समाज द्वारा अनुमोदित कुछ मानक **(norms)** तथा मूल्य **(values)** होते हैं जिन्हें व्यक्ति सीखता है। वह इन मूल्यों तथा मानकों को अन्य व्यक्तियों द्वारा किए गए व्यवहारों के आधार पर सीखता है। जैसे- एक मेडिकल छात्र जिन्दगी एवं मौत के प्रति डॉक्टरों के मूल्यों, मानकों एवं मनोवृत्तियों को उनके द्वारा (अर्थात् डॉक्टरों द्वारा) दिखलाए गए व्यवहार के आधार पर आसानी से सीख लेता है।

(b) भूमिका-शिक्षण **(role Learning)** में भूमिका सम्बन्धित कौशलों एवं

प्रविधियों को भी व्यक्ति सीखता है। सेकर्ड तथा बैकमैन के अनुसार, किसी भी भूमिका को सीखने में दो तरह के कौशलों की जरूरत पड़ती है- पहले प्रकार के कौशल वे हैं जो भूमिका में अन्तर्निहित कार्य से समबन्धित होते हैं तथा दूसरे प्रकार के वे कौशल हैं जो भूमिका-साथी से सम्बन्धित होते हैं। जैसे - शिक्षक की भूमिका में व्यक्ति को सिर्फ विषय-वस्तु का ज्ञान तथा विषय-वस्तु को वर्ग में कैसे उपस्थित करना चाहिए का ही ज्ञान नहीं होना चाहिए बल्कि इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि वर्ग में छात्रों को कैसे अनुशासित रखा जा सकता है। इन दोनों में पहला कार्य दूसरो कार्य से आसान होता है।

(c) भूमिका-शिक्षण में तीसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि लोग वैसे भूमिका के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं जिन्हें वे व्यवहारों का एक आदर्श मॉडल मानते हैं। इस तादात्म्य के परिणामस्वरूप व्यक्ति धीर-धीरे उस भूमिका को अपने आत्मसंप्रत्यय का एक अंग बना लेते हैं जो अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया में कुछ परिवर्तित भी होता है।

सामाजिक सीखना सिद्धान्त की कुद आलोचनाएँ भी किए गए हैं जो निम्नांकित है :-

(i) सामाजिक सीखना सिद्धान्त इस तथ्य की व्याख्या करने में असफल रहता है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी सामाजिक व्यवहार को सीखकर उसे बाद में क्यों दोहराता है जबकि बाद में उसे उस व्यवहार के करने के बाद किसी प्रकार का पुरस्कार या पुनर्बलन नहीं दिया जाता है।

(ii) सामाजिक सीखना सिद्धान्त द्वारा इस प्रश्न का भी सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिलता है कि कोई भी बालक किसी अन्य व्यक्ति को किसी खास तरह के व्यवहार करने पर उसे पुरस्कार या दण्ड मिलते जब देखता है, तो वह क्यों मात्र उसे देखकर उपयुक्त व्यवहार को करना तथा अनुपयुक्त व्यवहार को नहीं करना सीख लेता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद इस सिद्धान्त की मान्यता फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत की तुलना में अधिक है क्योंकि इस सिद्धान्त में समाजीकरण की व्याख्या कुछ ऐसे कारकों के रूप में की गयी जिसे वस्तुनिष्ठ रूप से मापना तथा अध्ययन करना सम्भव है।